भूमिका

पुस्तकें पढ़ना बाल विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। अगर पुस्तकें रोचक और आकर्षक हो तो बच्चों को पढ़ने में आनंद आता है। उन्हें पढ़ने की आदत पड़ जाती है। पुस्तकें पढ़ने से उनकी पठन क्षमता बढ़ती है। पुस्तकें पढ़ने से नए शब्दों एवं विभिन्न ध्वनियों से परिचय होता है। भाषा का विकास होता है। पुस्तके पढ़ने से एकाग्रता बढती है। विविध तरह की पुस्तकें पढने से उनका सामान्य ज्ञान बढता हैं। इन सब चीजों से उन्हें उच्च शिक्षा में मदद मिलती है वे जीवन में उन्नति करते है। हमेशा आगे बढते है।

इसलिए अन्य अच्छी आदतों की तरह पढ़ने की आदत भी बचपन से यानी प्राथमिक विद्यालय की पहली कक्षा से ही, पढ़ने लिखनेकी आदत डालनी चाहिए।

पाठ्य–पुस्तकों के साथ अन्य पुस्तके पढने से पाठ्यक्रम के विषय आसान और मनोरंजन बन जाते है। विद्यालय के अध्यापक पुस्तकों का उपयोग अपना पाठ मनोरंजक बनाने के लिए कर सकते है। पाठ्यक्रम के अलावा अन्य पुस्तकें भी शिक्षा का साधन बन सकती है।

पुस्तके पढ़ने से बच्चों का मनोरंजन होता है। पुस्तको में परी, बौने, राजा, राक्षस, जादूगर जैसे अनेक चरित्र मिलते है। इससे बच्चो की कल्पना शक्ति समृद्ध होती है। पुस्तके देश–विदेश की ही नहीं अंतरिक्ष तक की सैर कराती है। कविता की पुस्तकें से लय और ताल से परिचय कराती है। तकनीक तथा विज्ञान के रहस्यों को सुलझाती है।

जानकारी के साथ ऐसी पुस्तके पढने से बच्चों को अपनी संस्कृति व परम्परा का ज्ञान होता है। उनमें देश प्रेम और देशभिमान जागृत होता है।

संस्कार के लिए पुस्तको जैसा विकल्प नहीं है। आज हम स्कूल के बच्चों मे मानव मूल्यों की कमी महसूस कर रहे है। माता, पिता, अध्यापक ही नही सारे समाज को मानव मूल्यों के ह्रास से चिंता हो रही है।

बच्चों में अहिंसा भाईचारा, मित्रता, सहिष्णुता बड़ो के प्रति आदर समानता, श्रम की गरिमा जैसे संस्कार आज के एकल परिवार के परिवेश में पुस्तकें ही कर सकती है।

संस्कार के साथ –साथ भारत जैसे विकासशील देश में पुस्तकें पढ़ने की आदत, साक्षरता या पढ़ने की क्षमता को बनाए रख सकती है। आज भी भारत में कई बच्चों को विशेषतः लड़कियों को प्राथमिक शिक्षा के बाद कई कारणो से स्कूल छोड़ना पड़ता है। अगर उन्हे पढ़ने की आदत डाली जाती है तो वे कोई न कोई पुस्तक, पत्रिका या समाचार पत्र पढ़ेगें वरना पढ़ना लिखना भूल जाएंगे।

इसलिए प्राथमिक स्कूल के काल में अच्छी से अच्छी, रोचक और आर्कषक पुस्तकें उन्हें प्राप्त करानी होगी। आज की सामाजिक परिस्थितियों और परीक्षा तथा अन्य स्पर्धाओं में अव्वल आने के लिए अभिभावक और अध्यापकों के दबाव के कारण बच्चे मानसिक तनाव से ग्रस्त होते है। उन्हें तनाव से राहत मंनोरजक पुस्तकें दे सकती है। उनके मुँह पर हंसी ला सकती है। यानी पुस्तकें उपचार भी कर सकती हैं।

पुस्तकें हो तभी तो पढ़ेंगें। इन सब बातों को ध्यान में रखकर आयुवर्ग और पठन क्षमता के अनुरूप रोचक और आकर्षक पुस्तकों की सूची बनाई है। हमें पूरी उम्मीद है कि यह सूची बच्चों तथा अध्यापकों के लिए उपयोगी होगी। बच्चे उन्हें पढ़कर अपने बचपन का आनंद उठा सकेंगे।

बच्चे उन्हें पढ़ें इसके लिए अध्यापकों तथा लायब्रेरीयन्स को पुस्तकों से जुड़ी गतिविधियाँ करनी पड़ेंगी। जैसे कहानी पढ़ना, कहानी पढवाना, कहानी सुनना और सुनवाना, कहानी का नाटक मंचन, कहानी के चरित्र का अभिनय कहानी पर चित्र बनाना आदि। बच्चों को नाटक और अभिनय बहुत पसंद है। इनको करने के लिए वे कहानी अवश्य पढ़ेगें। बच्चों को यह बताना होगा कि चाहे नाटक, टी.वी या फिल्म हो, पुस्तक ही उनका मूल है। इसलिए इन सबके लिए पुस्तकें पढ़ना आवश्यक है। इन गतिविधिओं में भाग लेने के बाद बच्चे पुस्तकें जरूर पढ़ेंगे।

इससे पाँचवी कक्षा का बच्चा दूसरी कक्षा की पुस्तक भी नहीं पढ पाता यह दृश्य बदलेगा और हमारे स्कूल के बच्चों में पठन संस्कृति बढेगी।

–सुरेखा पाणंदीकर